International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 397-399

मध्ययुगीन भारतीय खेलों का ऐतिहासिक विश्लेषण

ज्योति
शोधछात्रा, इतिहास विभाग, म.द.वि. रोहतक, हरियाणा, भारत।

सारांश
मनुष्य अपने जीवन में मनोरंजन के लिए अनेक कर्म करता है। इन्हीं कर्मों में से एक विधा खेल की भी है। जहां एक ओर खेल से मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक रहता है वहीं मन भी प्रसन्न हो जाता है। खेलों में भी मनुष्य की हैसियत का पता चलता है। कुछ खेल इतने महंगे होते हैं कि जनसाधारण इनको खेलने के बारे ठीक से कल्पना भी नहीं कर सकता इन्हें तो केवल शासक वर्ग, धनाढ्य वर्ग ही खेल सकता है। मध्ययुग में भी खेलों में इसी तरह का अन्तर था। कुछ खेल जनसाधारण में ज्यादा लोकप्रिय थे तो कुछ खेल सिर्फ शासक वर्ग, अमीर वर्ग और उच्च सैनिक अधिकारी वर्ग तक ही सीमित थे। मध्ययुग के खेलों में इसी तरह के अन्तर को इस शोध–पत्र में दिखाने का प्रयास करेंगे।

मुख्य शब्द : खेल, मुसलमान, खिलाड़ी, चौगान, शिकार, अमीर, उच्च।

प्रस्तावना
खेल ऐसे होते हैं, जिनको सम्पन्न करने के लिए साधनों को जुटाने के लिए धन की जरूरत होती है। गरीब लोग या सामान्य व्यक्ति ऐसा न कर पाने के कारण ऐसे मनोरंजन के साधनों से वंचित रह जाते हैं। चौगान मध्ययुग के धनवान व्यक्तियों और शासक वर्ग का प्रिय खेल रहा है। इसे ही आजकल पोलो कहा जाता है। इस खेल का आरम्भ ही मुसलमानों द्वारा किया गया था। दिल्ली के सुल्तान जैसे कुतुबुद्दीन ऐबक इस खेल में विशेष रूचि रखते थे। ऐबक की मृत्यु चौगान खेलते समय घोड़े से गिरकर हुई थी।[1] मुगलकाल में बादशाह भी इस खेल के शौकीन थे। बाबर और हुमायूं के समय में इस खेल का प्रचलन कुछ कम हो गया था। अकबर को तो यह खेल काफी प्रिय था। अबुल फजल ने इस संबंध में लिखा है कि उसके समय में चौगान का खेल काफी प्रसिद्ध था। सम्राट इसमें काफी समय लगाता था। इस खेल के प्रसिद्ध मैदान फतेहपुर सीकरी और आगरे में थे। अकबर के समय के दो खिलाड़ी इस खेल के प्रसिद्ध हो गये थे। वे खिलाड़ी हैं 'मीर शरीफ' और 'मीर गियासुद्दीन'। इस खेल में कुछ महिलाएं भी भाग लेती थीं।[2] दूसरों को कष्ट देकर अपना मनोरंजन करना मनुष्य की एक प्रवृत्ति है। शिकार का खेल इसी प्रवृत्ति का परिणाम प्रतीत होता है। इस मनोरंजन के साधन द्वारा शिकार को कुछ ख्याति भी मिलती रही है। प्रशंसा का आकर्षण भी इस खेल को लम्बे समय से अब तक जारी रखे हुए है। शिकार सुल्तानों, मुग़ल बादशाहों, अमीरों और उच्च सैनिक अधिकारियों का प्रिय खेल था। यों तो शिकार कई जीवों का किया जाता था, परन्तु शेर का शिकार करना विशेष गौरव की बात मानी जाती थी। शेर के शिकार करने का मुग़ल सम्राटों को अधिक शौक था।[3] उनमें भी जहांगीर का नमा इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। उसने 'जहाँगीरनामा' में लिखा है कि 'अहेरिये' ने समाचार दिया है कि पास में ही एक शेर दिखाई पड़ा और इससे हमें अहेर खेलने की इच्छा हुई। जंगल में जाने पर तीन शेर दिखाई दिये। चारों को उन्हें मारकर हम महल लौट आए। शेर का शिकार करने में हमारी रूचि ऐसी प्रबल है कि जब तक यह मिलता है तब तम हम दूसरे शिकार की इच्छा ही नहीं करते।' विशेषता यह है कि शेर के शिकार के शौकीन जहांगीर शिकार के लिए शाही बेगमों को भी साथ ले जाता था। यह बात उसी के वर्णन से स्पष्ट है 'शनिवार दसवीं को अहेरियों से सूचना दी कि आसपास में एक शेर है जो प्रजा तथा यात्रियों को बहुत हानि पहुंचा रहा है। हमने तुरन्त आज्ञा दी कि हाथियों को एकत्र कर जंगल को घेर लें। दिन बीतने पर हम भी बेगमों के साथ सवार होकर निकले..... शेर की गंध पाकर हाथी कभी आराम से नहीं रह सकता और बराबर हिलता–डोलता रहता है और सवारी को गोली चलना भी बहुत कठिन है, यहां तक कि मिर्जा रूस्तम भी जो हमारे बाद निशाने मारने में अद्वितीय है, हाथी पर से गोली निशाने पर मारने में कई अवसर पर दो–तीन बार चूक गया था। परनतु नूरजहां ने पहली ही गोली ऐसी मारी कि शेर ढेर हो गया।'[4]

सल्तनतकाल में शिकार कार्य को सुविधाजनक ढंग से सम्पन्न करने के उद्देश्य से 'अमीर–ए–शिकार' नामक विभाग की स्थापना की गई थी। इस विभाग के प्रधान अधिकारी के अधीन 'आरिजन–ए–शिकार', खस्सादरन तथा निहतरन आदि कर्मचारी होते थे। ये शिकार योगय जीवों की सुरक्षा की व्यवस्था करते थे। दिल्ली के पास 'शाही शिकार–गाह' था जो 24 मील के क्षेत्र में फैला था। शिकार के खेल को ज्यादा से ज्यादा मनोरंजक बनाने के उद्देश्य से शिकार पार्टियों आदि का आयोजन किया जाता था। फीरोज तुगलक के इतिहासकार अफीक ने 'तारीखे फीरोजशाही' में इसका सविस्तार उल्लेख किया है।[5]

शिकार के लिए कई प्रकार के जानवरों को प्रशिक्षण दिया जाता था। प्रशिक्षण देने के लिए कई प्रकार के जानवर पाले जाते थे। हाकिन्स ने वर्णन किया है कि बादशाह के पास शिकार के लिए 3000 हिरनी, 400 तेंदुए और 4000 बाज रहते हैं।[6] अकबर शिकार करने में तो रूचि रखता ही था, शिकार की नई प्रणालियां खोजने का भी शौकीन था। उसने कमरगाह नाम की एक नई प्रणाली का आविष्कार किया था। उसे अपना शौक पूरा करने के लिए यदि विदेशों से मंहगे दामों पर भी जानवर खरीदने पड़ते थे, तो खरीदता था। जहांगीर भी विदेशी जानवर आयात करता था। जहांगीर काल में कुत्ते इंग्लैण्ड और काबुल से मंगाये जाते थे।[7] अकबर द्वारा खोजी गई नई शिकार प्रणाली का अन्य बादशाहों ने भी उपयोग किया था। शासक वर्ग शिकार के लिए सस्ते तरीके अपनाना अपने गौरव के खिलाफ समझता था। जहां साधारण व्यक्ति पक्षियों का शिकार तीर–कमान से कर लेते थे, वहीं शासक वर्ग पक्षियों के

शिकार के लिए बन्दूक का सहारा लेता था। जिस प्रकार ईराक का शहजादा बदर भारत के राजस्थान प्रदेश के दुर्लभ पक्षी गौडावण के शिकार के लिए अपने प्रशिक्षित कीमती बाजों को लाया था और उनको भूखा रखकर उनसे शिकार करवाया था। उसी प्रकार मध्ययुग में शासक प्रशिक्षित बाजों द्वारा पक्षियों का शिकार करते थे। अबुल फजल ने वर्णन किया है।[8]

शासक वर्ग इस बात की परवाह नहीं करता था कि शिकार कितना मंहगा पड़ता है। इस बात का अनुमान इस तथ्य से ही लगाया जा सकता है कि बादशाह के शिकारी पर जाने से पहले कर्मचारी उस स्थान का चुनाव करते थे जहां शिकार–योग्य पशु अधिकता से मिलते थे। तदन्तर वे चालीस कोस में घेरा डालकर ढोल बजाकर पशुओं को उस निर्दिष्ट स्थान की ओर लाते थे जहां बादशाह अपने कुशल शिकारियों के साथ घोड़े पर सवार होकर जंगली पशुओं शिकार करने के लिए तैयार रहता था। इस कार्य के लिए चयनित कर्मचारियों की संख्या कभी–कभी पांच हजार तक हो जाती थी। लेकिन शिकार के संबंध में साधारण जनता पर कुछ पाबन्दियां थी। शेर का शिकार केवल बादशाह ही कर सकते थे। जहांगीर ने इनमें से भी केवल नर चीते या नर शेर को मारने की ही छूट दी थी। हाथी का शिकार करने वाले को बादशाह की अनुमति आवश्यक थी।[9] घोड़े युद्ध के काम आते थे। उससे पहले शासक वर्ग घुड़सवारी करने का अभ्यास करता था। घुड़सवारी मनोरंजन का भी अच्छा साधन था। अच्छी–अच्छी किस्म के घोड़े रखे जाते थे। उनकी नस्त सुधारने के लिए प्रयत्न किये जाते थे।

कुछ सुल्तानों को मछली पकड़ने का भी शोक था। वे मछली पकड़ने को मनोरंजन का साधन मानते थे। अफीफ ने 'तारीख' में फीरोजशाह तुगलक के मछली पकड़ने के कार्य का उल्लेख किया है। सुल्तानों की तुलना में मुग़ल बादशाह मछली पकड़ने में विशेष रूचि रखते थे। जहांगीर स्वयं मछली पकड़ने का बड़ा शौकीन था। वह 'भंवरजाल' द्वारा काफी मछलियां पकड़ सकता था। वह 'रोहू' मछली खूब पकड़ा करता था। बाबर ने भी 'तुजुक–ए–बाबरी' में मछली पकड़ने का वर्णन किया है।[10]

मुग़लकाल में आज के युग की तरह जनाधिक्य नहीं था। व्यक्ति की ओर ध्यान देते थे। सामान्यतः लोगों के स्वास्थ्य अच्छे थे। उस समय दंगलों के आयोजन होते थे, जिनमें पहलवानों की कुश्तियों के प्रदर्शन होते थे। कुश्ती में धनी और गरीब सब वर्गों के लोग रूचि रखते थे। बादशाह अच्छे पहलवानों को प्रोत्साहन और संरक्षण प्रदान करते थे। शासक वर्ग मुक्केबाजी देखकर अपना मनोरंजन करता था। अकबर को इसका विशेष शौक था। उसने पर्शियन और तूरानी मुक्केबाजों को अपने दरबार में नियुक्त कर रखा था। डी लाइट ने वर्णन किया है कि मुगल बादशाह मुक्केबाजी देखकर अपना मनोरंजन करते थे।

शासक वर्ग के मनोरंजन के अनेक साधन थे। संध्या–समय विशेषतया ग्रीष्म ऋतु में शासक वर्ग अपने परिवार के साथ नौका विहार का आनन्द लेते थे। उनके आनन्द के लिए निर्मित नौकाएं 'बजारा' या 'मोर पंख' कहलाती थीं।[11] घोड़े, बैल और कुत्ते आदि की दौड़ों का आयोजन किया जाता था। अकबर कुत्तों और बैलों की दौड़ों का आनन्द लेता था। घुड़दौड़ अन्य पशुओं की दौड़ों में अधिक महत्त्व की थी। दौड़ में हार–जीत के दांव लगाए जाते थे।[12] पशुओं को लड़वा कर अपना मनोरंजन किया जाता था। शासक वर्ग पशुओं की लड़ाई के ऐसे आयोजन करा सकते थे, जो बहुत महंगे पड़ते थे, जिन्हें सामान्य व्यक्ति करा ही नहीं सकते थे। शासक वर्ग शेर, चीते, हाथी, हिरण, जंगली सुअर आदि की लड़ाईयों द्वारा अपना मनोरंजन करते थे। इनके अलावा मुर्गे की लड़ाई तो उच वर्ग के लोगों को भी आकर्षक लगती थी। कभी–कभी आदमी और हिंसक पशुओं की लड़ाई का आयोजन किया जाता था। इस लड़ाई में यदि व्यक्ति जी जाता था तो उसे 'मनसबदार' कहा जाता था। कभी–कभी अपराधी व्यक्ति को कटार देकर भूखे शेर या हाथी के आगे खड़ा कर दिया जाता था। यदि अपराधी व्यक्ति विजयी हो जाता था तो उसे मिलने वाले दण्ड से मुक्ति दे दी जाती थी।[13] आगरा, फतेहपुर सीकरी और दिल्ली में पशु–युद्ध के लिए बड़े–बड़े मैदान थे। अकबर हाथियों की लड़ाई बहुत पसंद करता था। कभी–कभी तो वह अपने शाही हाथी 'फौहा' और 'लोगा' को भी लड़ने के लिए छुड़वा देता था। 'तुजुक–ए–जहांगीरी' में चीते और सांड़ की लड़ाई का उल्लेख मिलता है। ऊंटों की भी लड़ाई कराई जाती थी। लड़ने के लिए ऊंट अजमेर, बीकानेर, जोधपुर और गुजरात से मंगाए जाते थे। अमीर लोग कबूतर उड़ाने का कार्यक्रम आयोजित करते थे। जहांगीर ने ईरान और तूरान से अच्छे कबूतरों के जोड़े मंगाए थे।[14]

यह एक प्राचीन खेल है। मध्ययुग में इस खेल को खेलना शान का विषय माना जाता था। इस खेल को चौपड़, चौस और पच्चीसी तीन नाम से जाना जाता था। से उसी ढंग से खेला जाता था जैसे आजकल खेला जाता है। शाही परिवार यह खेल बड़े चाव से खेलता था। औरंगजेब की बड़ी पुत्री अपना बहुत सा समय चौपड़ खेलने में व्यतीत करती थी। लेखकर सरकार ने इस तथ्य का उल्लेख किया है। अबुलफजल ने 'अकबरनामा' में इस खेल का उल्लेख किया है। सी के आधार पर अशरफ महोदय ने बताया है कि यह खेल खांचों के अनुसार खेला जाता था। उन्होंने खांचों का विस्तृत वर्णन किया है।[15] अकबर का अन्य खेलों की भांति, इस खेल में भी काफी मन लगता था। उसने फतेहपुर सीकरी में जमीन पर खांचे बनवा लिए थे जिस पर वह गोटों की जगह स्त्रियों को बिठा कर चौपड़ खेलता था।[16] सत्रहवीं शताब्दी में चौपड़ शाही दरबार का सबसे अधिक प्रिय खेल बन गया था। अकबर ने इस खेल के आधार पर चन्दल–मण्डल जैसे प्रसिद्ध खेल का आविष्कार किया था जिसमें 64 गोटियां और 16 खिलाड़ी होते थे। चौपड़ में 16 गोटियां और 4 खिलाड़ी होते थे।

ताश के तरह–तरह के खेल मध्यकाल में भी प्रचलित थे। यद्यपि ताश का खेल और भी पहले से भारत में प्रचलित था। इस मत को मानने वालों में प्राणनाथ चोपड़ा का नाम उल्लेखनीय है। वे इसे मुगलकाल से पहले का खेल मानते हैं। डॉ. अशरफ की मान्यता है कि भारत में ताश का खेल बाबर ने चलाया था। इस प्रकार इनका मत प्राणनाथ चोपड़ा से भिन्न है।[17] यों तो सामान्य व्यक्ति भी शतरंज का खेल खेल कर अपना मनोरंजन करते थे परन्तु बादशाह और अमीर भी इसे खेला करते थे। वे इस खेल द्वारा रण–स्थल का प्रबन्ध भी सीखते थे, ऐसी मनूची की मान्यता है। मध्ययुग में आज की तरह शतरंज की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं भी होती थीं। जहांगीर के दरबारी 'खान–ए–खाना' का मुकाबला पर्सिया के शाह शफी से हुआ था।[18] अमीर खुसरो, हसन निजामी और जायसी ने शतरंज के खेल का अनेक स्थानों पर वर्णन किया है जिससे स्पष्ट है कि मध्ययुग में यह खेल खूब प्रचलित था और देश के विभिन्न भागों में खेला जाता था। जायसी ने राजा रत्नसेन और अलाउद्दीन के बीच चित्तौड़ में हुए शतरंज के खेल की चर्चा बड़े काव्यात्मक ढंग से की है।

निष्कर्ष

इस हम अध्ययन के आधार पर हम कह सकते हैं कि मध्यकाल में भी आज के युग से मिलते–जुलते कुछ खेल जैसे शतरंज, ताश, पोलो (चौगान), कुश्ती, घुड़ दौड़ आदि के साथ–साथ शिकार, जानवरों व पशुओं की लड़ाई जैसे खेलों को खेल कर अपना

मनोरंजन किया करते थे। लेकिन मध्यकाल में यह खेल बहुत मंहगे होते थे इसलिए जनसाधारण की पहुंच से दूर बादशाह, अमीरवर्ग और उच्च सैनिक अधिकारियों में ज्यादा प्रचलित थे। जनसाधारण अपने मनोरंजन के लिए ताश खेलना, कुश्ती, पक्षियों का शिकार करना आदि कम लागत वाले खेल खेलते थे।

सन्दर्भ

1. अशरफ के.एम., लाईफ एण्ड कंडीशंस ऑफ दि पीपुल ऑफ हिन्दुस्तान, दिल्ली, 1959, पृ. 127
2. अबूल फजल, अकबरनामा, भाग–2, पृ. 173
3. श्रीवास्तव ए.एल., मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, आगरा, 1959, पृ. 38
4. जहांगीरनामा, अनुवादक बड़ारतनदास कांशी, पृ. 237
5. अशरफ, के.एम., वही, पृ. 144
6. हॉकिन्स, अर्ली ट्रेवल्स इन इण्डिया, पृ. 104
7. बदायूंनी, मुनतखब–उत–तवारीख, पृ. 94
8. आइन–ए–अकबरी, वही, पृ. 351
9. वही, पृ. 358
10. बाबरनामा, अनुवादक, ए.एस. बेवरीज, नई दिल्ली, 2003, पृ. 108
11. रशीद, ए., सोसायटी एण्ड कल्चर इन मीडिवल इण्डिया, कलकत्ता, 1969, पृ. 97
12. वही, पृ. 98
13. जहांगीरनामा, वही, पृ. 238
14. वही, पृ. 239
15. अशरफ, वही, पृ. 199
16. लेनपुल, हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, भाग–4, पृ. 37
17. अशरफ, वही, पृ. 296
18. मनूची, स्टोरिया डो मोगोर, भाग–2, पृ. 460–61